जाको नामै रसना

जाको नामै रसना, होसी कैसी मीठी हक।

जिनकी जैसी बुजरकी, जुबां होत है तिन माफक।।

मीठी जुबां मीठे वचन, मीठा हक मीठा रूहों प्यार।

मीठी रूह पावे मीठे अर्स की, जो मीठा करे विचार।।

प्यारी रसना सों अनेक, प्यारी बातें करें बनाए।

प्यारे प्यारी रूह बीच में, ए गुण जुबां किने न गिनाए।।

सब अंग जिनके इस्क के, तिनकी कैसी होसी जुबान।

अर्स रूहें जाने जागृत, जो रहें सदा कदमों सुभान ।।

सुनो महामत रसना रस, और सुनाइयो मोमिन।

जो हुकम कहे तोहे हेत कर, हक रसना के गुन ।।